Impact Factor (SJIF): 6.126 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 05/January/2025 IJRAW: 2025; 4(2):06-08 Accepted: 02/February/2025

बेलन एवं सोन घाटी में हुए अनुसंधान कार्यों का अवलोकन

*[1]डॉ. विनोद यादव

*[1]असिस्टेन्ट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, राजकीय महाविद्यालय मंगरौरा प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

भारत में प्रागैतिहासिक काल से सम्बंधित अनुसंधान कार्य व्यवस्थित रूप से उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आरम्भ हुआ। इस सम्बन्ध में सबसे उल्लेखनीय तथा पुरोगामी कार्य राबर्ट ब्रूस फूट का था। ये भारतीय भू–वैज्ञानिक सर्वेक्षण विभाग में भू–तत्ववेत्ता थे। इन्होंने तमिलनाडु में पल्लवरम् नामक स्थान के लैटेराइट ग्रैवेल से पहला वास्तविक पूर्ण पाषाण कालीन उपकरण 13 मई सन् 1863 ई0 को खोजा था। इस प्रकार ब्रूस फूट ने भारत में न केवल प्रस्तर युगीन उपकरणों के संकलन का ही श्री गणेश किया, अपितु प्रागितिहास के अध्ययन की दिशा में प्रथम ठोस चरण उठाया। इसके पूर्व भारत में इन उपकरणों की ओर किसी का भी ध्यान आकर्षित नहीं हुआ था। इसीलिए ब्रूस फूट को ही प्रायः 'भारतीय प्रागितिहास का जनक' कहा जाता है।

मुख्य शब्दः बेलन घाटी, सोन घाटी, सिहावल, खुण्टेली, पटपरा, बघोर, खेतौंही।

प्रस्तावना

उत्तर–मध्य भारत (उत्तरी विन्ध्य क्षेत्र) में अब तक हुए अनुसंधानों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इस क्षेत्र में मानव का उद्भव मध्य प्रातिनूतन काल में हो गया था। पुरातात्विक सम्पदा की सम्पन्नता के कारण यह क्षेत्र विश्व के पुरातात्विक मानचित्र पर विशेष महत्व रखता है। प्रागितिहासिक अध्ययन की दृष्टि से येल कैम्ब्रिज अभियान दल के निदेशक डी टेरा तथा पैटरसन [1] एवं उनके पश्चात् ज्वायनर [2] ने मध्य सोन घाटी के महत्व के सम्बन्ध में ध्यान आकृष्ट किया था। डी टेरा ने मिर्जापुर के अश्मीभूत जीवावशेषों से युक्त मध्य प्रातिनूतन कालीन जमावों के सर्वेक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। उनकी यह आकांक्षा सन् 1949 में पूर्ण हुई, जब मिर्जापुर के सिंगरौली बेसिन का सर्वेक्षण कृष्णास्वामी तथा सौन्दरराजन [3] ने किया तथा काकबर्न [4] द्वारा वर्णित कतिपय स्थलों के पुनरावलोकन के अतिरिक्त दो स्थलों से बोल्डर कांग्लोमरेट के जमाव से निम्न पुरापाषाणिक उपकरणों की खोज की।

प्रो०जी०आर० शर्मा [5] ने सर्वप्रथम 1955 ई० में पुरापाषाणिक स्थल की खोज यमुना के सहायक नालों के किनारें बरियारी (बाँदा जिला) नामक स्थल पर की। प्रो० आर०के० वर्मा [6] ने सन् 1958–62 में सोनभद्र तथा मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश) से निम्न पुरापाषाणिक उपकरणों की खोज की। निसार अहमद [7] ने सन् 1962–63 में सोन की ऊपरी घाटी का सर्वेक्षण कर 35 पुरास्थलों से 167 उपकरण खोज निकाला था।

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पुरातत्वविदों जी०आर० शर्मा, आर०के० वर्मा, वी०डी० मिश्रा, डी० मण्डल, बी०बी० मिश्र, आदि ने सन् 1963–64 में बेलन, टोंस, सोन इत्यादि नदी घाटियों का सर्वेक्षण [8] प्रारम्भ किया, जहाँ से निम्न पुरापाषाणिक उपकरण प्राप्त हुए। 1964ई० में इलाहाबाद जिले में बटाउँबीर नामक निम्नपुरापाषाणिक स्थल प्रकाश में आया। [9] इन पुरातत्वविदों ने नदियों के प्रातिनूतन कालीन जमावों, पशुओं की जीवाश्मित हड्डियाँ और उपकरण उद्योगों के विकास क्रम का अध्ययन किया। इस सन्दर्भ में बेलन घाटी का विशेष महत्व है, जहाँ बोल्डर कांग्लोमरेट के जमाव से पेबॅल उपकरण, हैण्डएक्स, क्लीवर, स्क्रेपर इत्यादि निम्न पुरापाषाणिक उपकरण प्राप्त हुए हैं। द्वितीय ग्रेवल से ब्लेड, फलक, स्क्रेपर अथवा मध्य पुरापाषाण काल के उपकरण तथा तृतीय ग्रैवेल से ब्लेड–ब्यूरिन प्रकार अथवा उच्च पुरापाषाण कालीन उपकरण प्राप्त हुए हैं। उसके अतिरिक्त इन विभिन्न प्रकार के उपकरणों में एक निश्चित विकासात्मक क्रम भी देखा गया।

*Corresponding Author: डॉ. विनोद यादव

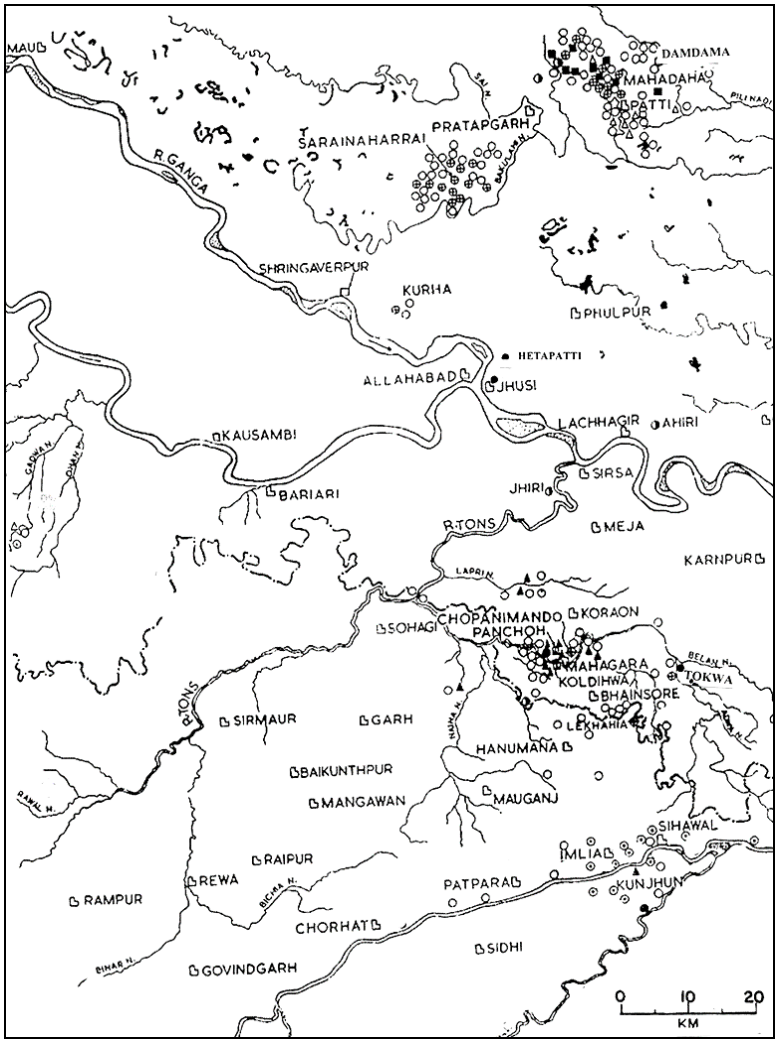

रेखाचित्र 1: उत्तर–मध्य भारत के प्रमुख पुरास्थल

सन् 1968 में आर०के० वर्मा, बी०बी० मिश्र, जे०एन० पाल, वी०डी० मिश्र तथा जे०एन० पाण्डेय आदि विद्वानों ने मध्य सोन घाटी में सिहावल के निकट जोगदहा पुल (मध्य प्रदेश) के पास पुनः सर्वेक्षण कार्य किया। कालान्तर में बेलन एवं सोन घाटी तथा उनकी सहायक नदियों व नालों का सघन सर्वेक्षण प्रो० जी०आर० शर्मा के निर्देशन में सम्पन्न हुआ, जिससे अनेक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थल प्रकाश में आये। इस सघन सर्वेक्षण में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के पुरातत्वविदों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 13601 वर्ग किलोमीटर का परिक्षेत्र पश्चिम में चुरहट से लेकर पूर्व में बिच्छी तक तथा उत्तर में कैमूर की पहाड़ियों से लेकर दक्षिण में सोन तथा गोपद के संगम तक के क्षेत्र का सर्वेक्षण किया गया। इस क्षेत्र के सर्वेक्षण में 1980–82 ई० में कैलिफोर्निया स्थित वर्कले विश्वविद्यालय के जे०डी० क्लार्क के सहयोगी पुरातत्ववेत्ताओं, नृतत्वशास्त्रियों एवं भूतत्ववेत्ताओं के दल [10] ने भी अपना सहयोग दिया। कालान्तर में प्रो० आर०के० वर्मा [11] ने रीवा विश्वविद्यालय के तत्वावधान में 1985–97 ई० तक सर्वेक्षण किया, जिसके परिणामस्वरूप वनस्पतियों के जीवाश्म भी प्रकाश में आये।

आस्ट्रेलिया के मैक्वायर विश्वविद्यालय के मार्टिन विलियम्स तथा न्यूजीलैण्ड के कीथ रायस [12] के अनुसार मध्य सोनघाटी के भूतात्विक अनुसंधान के परिणाम स्वरूप आधार शिला के ऊपर चार भूतात्विक जमाव सिहावल जमाव (निम्न पुरापाषाण कालीन), पटपरा जमाव (मध्य पुरापाषाण कालीन), बघोर जमाव (उच्च पुरापाषाण कालीन), खेतौंही जमाव (मध्य पाषाण कालीन) प्रकाश में आये हैं।

इसके अलावा मार्टिन विलियम्स तथा उनके सहयोगियों ने कुछ समय बाद सोन नदी के दायें किनारे पर स्थित खुण्टेली गाँव के समीप एक नई भूतात्विक इकाई की खोज की, जिसे 'खुण्टेली जमाव' [13] कहा जाता है। यह जमाव सिहावल तथा पटपरा जमाव के मध्य स्थित है। इस जमाव से मध्य पुरापाषाण कालीन उपकरण प्राप्त हुए हैं। मध्य सोन घाटी के भूतात्विक जमावों को अब निम्न क्रम में रखा जाता है–

1. सिहावल जमाव,
2. खुण्टेली जमाव,
3. पटपरा जमाव,
4. बघोर जमाव,
5. खेतौंही जमाव।

मध्य सोनघाटी में हुए पुरातात्विक अन्वेषणों के फलस्वरूप प्रातिनूतन काल के भूतात्विक जमाव के साथ ही साथ निम्न, मध्य एवं उच्च पुरापाषाण कालीन अनेक पुरास्थल भी प्रकाश में आये हैं। जिनमें 47 निम्न पुरापाषाण कालीन, 86 मध्य पूर्व पाषण कालीन एवं 120 पुरास्थल उच्च पुरापाषाण काल से सम्बन्धित हैं। सोन नदी की उत्तरवर्ती पहाड़ियों तथा सोन नदी के समानान्तर तट के निकट नीची पहाड़ी पर बहुत से पुरास्थलों को चिन्हित किया गया है। इन सभी पुरास्थलों से भारी मात्रा में प्रस्तर उपकरणों का संग्रह किया गया है। मध्य सोनघाटी के उत्खनित पुरास्थलों में सिहावल, नकझरखुर्द, पटपरा, ढाबा, बघोर एवं रामपुर आदि प्रमुख हैं।

बेलन घाटी में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के प्रो० जी०आर० शर्मा के निर्देशन में भूतात्विक एवं पुरातात्विक अन्वेषण तथा सर्वेक्षण कार्य किया गया, जिसके परिणाम स्वरूप प्रातिनूतन कालीन एवं नूतन कालीन पुरास्थल प्रकाश में आये। प्रस्तर पुरावशेषों के अलावा पशुओं के जीवाश्म बेलन नदी के अनुभागों में मिलते हैं। बेलन नदी के अनुभागों का दक्षिण में मिर्जापुर जिले में स्थित बरौंधा नामक स्थल से लेकर उत्तर में इलाहाबाद जिले की मेजा तहसील में बेलन–टोंस संगम तक के क्षेत्र का अध्ययन किया गया है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने [14] 1963–64 ई० में बेलन तथा कैमूर क्षेत्र में सर्वप्रथम सर्वेक्षण कार्य किया। इन सर्वेक्षणों के परिणाम स्वरूप कई महत्वपूर्ण पुरापाषाणिक स्थल प्रकाश में आये। सन् 1966–67 से इस दल द्वारा उत्तर विन्ध्य क्षेत्र एवं मेजा तहसील (अब कोरांव तहसील) के बेलन घाटी में विधिवत् सर्वेक्षण हुआ, जिसमें डैय्या नामक स्थान से लेकर देवघाट नामक स्थान तक बेलन नदी में लगभग 18 मीटर ऊँचे नदी अनुभाग प्रकाश में आए जो कहीं–कहीं पर 21 मीटर ऊँचे हैं। इस अनुभाग में 10 जमाव हैं तथा विभिन्न जमावों में निम्न पुरापाषाण काल तक के मानवीय क्रिया–कलापों के साक्ष्य उपलब्ध हैं। [15] प्रथम तथा द्वितीय ग्रैवेल जमावों के मध्य में मिलने वाली सिल्ट को छोड़कर शेष सभी जमावों से पुरापाषाण काल से लेकर मध्य पाषाण काल तक के उपकरण तथा पशुओं के जीवाश्म प्राप्त होते हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार बेलन एवं सोन घाटी में अब तक हुए अनुसंधानों के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि यह क्षेत्र काफी लम्बे समय से मानवीय गतिविधियों का केन्द्र रहा है। उच्च पुरापाषाणिक संस्कृति जिसे आधुनिक मानव के क्रिया–कलापों के सन्दर्भ में जाना जाता है, इस क्षेत्र में उसके भी साक्ष्य भली–भाँति मिलते हैं। अतः उत्तर–मध्य भारत में स्थित यह क्षेत्र पुरातात्विक सम्पदा के लिए काफी समृद्धशाली रहा है और पुरातत्वविदों को अपने अध्ययन के लिए काफी रोचक सामग्री उपलब्ध कराता रहा है।

सन्दर्भ

1. डी. टेरा एण्ड टी.टी. पैटरसन, स्टडीज ऑन द आइस एज इन इण्डिया एण्ड एसोसिएटेड ह्यूमन कल्चर्स, कारनेजी इंस्टीट्यूट ऑफ वाशिंगटन, पब्लिकेशन नं. 493, वाशिंगटन डी.सी., 1939, पृ. 439.
2. ज्वायनर, एफ.ई., 'प्रीहिस्ट्री इन इण्डिया', दकन कालेज, सीरीज नं.1, पुणे, 1950, पृ. 78–80.
3. कृष्णास्वामी, वी.डी. एण्ड सौन्दरराजन, के.बी., लिथिक टूल इण्डस्ट्रीज ऑफ सिंगरौली बेसिन, ऐन्सिएण्ट इण्डिया–7, 1961, पृ. 41.
4. काकबर्न, जे., ऑन पैलियोलिथिक इम्पलीमेंट्स फ्राम द ड्रिफ्ट ग्रेवॅल्स ऑफ द सिंगरौली बेसिन साउथ मिर्जापुर, जर्नल ऑफ द रॉयल एन्थ्रोपोलॉजिकल इन्स्टीट्यूट नं. 17, 1988, पृ. 57–69.
5. इण्डियन आर्कियोलॉजीः ए रिव्यू, 1955–56, आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, पृ. 4.
6. वर्मा, आर. के., भारतीय प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ, परम ज्योति प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 48.
7. अहमद, निसार, 1966, दि स्टोन एज कल्चर्स ऑफ द अपर सोन वैली, पी–एच.डी. थीसिस, दकन कालेज, पुणे, 1977.
8. इण्डियन आर्कियोलॉजीः ए रिव्यू, 1962–63, आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, पृ. 32.
9. इण्डियन आर्कियोलॉजीः ए रिव्यू, 1963–64, आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, पृ. 39.
10. शर्मा, जी.आर. एण्ड जे.डी. क्लार्क, पैलियोइनवायरनमेंट्स एण्ड प्रीहिस्ट्री इन द मिडिल सोन वैली, मैन एण्ड एनवायरनमेण्ट–VI, 1983, पृ. 56–62.
11. वर्मा, आर.के., पुरातत्व अनुशीलन, परम ज्योति प्रकाशन, इलाहाबाद, 2005, पृ. 72–73.
12. विलियम्स, मार्टिन एण्ड कीथ रॉयस, एलुवियल हिस्ट्री ऑफ द मिडिल सोन वैली, नार्थ–सेण्ट्रल इण्डिया, पैलियो इनवायरनमेण्ट्स एण्ड प्रीहिस्ट्री इन द मिडिल सोन वैली, इलाहाबाद, 1983, पृ. 9–21.
13. मिश्रा, वी.डी., स्टोन एज कल्चर्स, देयर क्रोनोलॉजी एण्ड विगनिंग ऑफ एग्रीकल्चर इन नार्थ–सेण्ट्रल इण्डिया, मैन एण्ड इनवायरनमेण्ट, वॉल्यूम–2007; 32(1):1–14.
14. इण्डियन आर्कियोलॉजीः ए रिव्यू, 1962–63, आर्कियोलॉकिल सर्वे ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली, पृ. 31.
15. शर्मा, जी.आर., हिस्ट्री टू प्रीहिस्ट्रीः आर्कियोलॉजी ऑफ द गंगा वैली एण्ड द विन्ध्याज, प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, 1980, पृ. 80–88।